सप्तम अध्याय

उ प सं हा र

पृष्ठ : १४५ से १५२

हिंदी साहित्य में श्री सुमित्रानंदन पंत "प्रगतिवाद" के प्रणेता है । अनेक विव्दान तथा आलोचकों ने प्रगतिवाद को साम्यवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति माना है । इसलिए पंत जी की "युगान्त" "युगवाणी" और "ग्राम्या" आदि रचनाओं का विचार इसी प्रगतिवाद के अंतर्गत हुआ है । परंतु प्रस्तुत लेखिका ने पंत जी की इन रचनाओं में अभिव्यक्त प्रगतिवादी विचारों को तथाकथित प्रगतिवादी दृष्टि से नहीं देखा है । बल्कि इन रचनाओं में निहित उनकी समन्वयवादी चेतना को प्रगतिवाद के रूप में देखा है ।

पंत जी की रचनाओं के अध्ययन से यह बात स्पष्ट होती है कि, वे किसी वाद, मत या सिध्दान्त के प्रचारक नहीं हैं । वे जीवन के द्रष्टा हैं । उनकी अपनी भविष्य-द्रष्टा की दृष्टि है । पंत जी की सृजनात्मक चेतना को न छायावाद का शून्य आकाश घेर पाया, न प्रगतिवाद की संकीर्ण कारा , न प्रयोगवाद की प्रयोगशीलता । पंत जी के इस बहु आयामी व्यक्तित्व के आधार है अध्यात्मवाद, मार्क्सवाद, समाजवाद, गांधीवाद । पंत जी की सृजनात्मक चेतना इन वादों का समन्वय करती हुई अंत में श्री अरविंद के नवमानवतावाद के आलोक में प्रवेश करती है । अरविंद दर्शन का आधार अध्यात्मवाद है । अत: पंत जी की समन्वयात्मक चेतना अध्यात्म से निकल कर फिर अध्यात्म में ही विलिन हो जाती है ।

पंत जी पहले से ही आस्तिक रहे हैं । अत: अध्यात्म के प्रति उनमें जबरदस्त आकर्षण है । अध्यात्म के उद्देश त्रस्त, व्यग्र मानवात्मा को शांति देना है, जिन से पंत जी अत्यंत प्रभावित रहे हैं । परंतु अध्यात्म में प्रतिपादित जगत का मिथ्यत्व और संसार से विरक्ति का

उन्होंने स्वीकार नहीं किया है । अपने अध्यात्मिक चिंतन में उन्होंने अध्यात्मवाद को केवल चिंतन के क्षेत्र में और संस्कृति के क्षेत्र में स्थान दिया है । अपने अध्यात्मवाद में उन्होंने अध्यात्मवाद के लोकोपयोगी रूप [चेतना का एकत्व] को स्वीकारा है । इसीलिए उनकी कविताओं में देश, धरती तथा सारे संसार के प्रति रागात्मक भावनाएँ मिलती हैं ।

अध्यात्मवाद के साथ कवि मार्क्सवाद से भी प्रभावित रहे हैं । मार्क्सवाद के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद में उन्हें विश्वास है ; पंत जी ने प्रगति के पथ पर विनाश और सृजन के गीत गाए हैं । युगान्त से लेकर उत्तरा तक उनके इन गीतों के सूर सुनने को मिलते हैं । वस्तुत: विनाश और सृजन के तत्त्व से पंत जी अनभिज्ञ नहीं हैं । "पल्लव" संकलन की अनेक कविताओं में इस तत्त्व की अभिव्यक्ति हुई हैं । जब मार्क्सवाद का अविर्भाव नहीं हुआ था । उदा. " मूँदती नयन मृत्यु की रात, खोलती नव जीवन की प्रात।" इस प्रकार हम देखते हैं कि, विकसित मानव-समाज के लिए नाश और सृजन के चक्र पर कवि का सदैव विश्वास रहा है ।

पंत जी ने कोरे मार्क्सवाद को नहीं अपनाया है । क्यों कि मार्क्सवाद में उन्हें अनेक त्रुटियाँ दिखाई दी । अनेक त्रुटियों के होते हुए भी पंत जी मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हुए हैं । क्यों कि मार्क्स और उनका चिंतन कुछ अच्छे गुण लेकर उपस्थित हुआ था । मार्क्सवाद के गंभीर अध्ययन के बाद पंत जी ने देखा कि मार्क्सवाद की शक्ति उसके खोखले दर्शन में नहीं है, बल्कि उसके वैज्ञानिक आदर्शवाद में हैं । इस वैज्ञानिक आदर्शवाद में ही जनहित अथवा सर्वहारा का पक्ष है । पंत जी ने मार्क्सवाद के इसी शक्तिस्थान को अर्थात उसके लोक संरक्षण के पक्ष को और इसके साथ मार्क्सवाद के ऐतिहासिक यथार्थवाद के पक्ष को ग्रहण किया है ।

कवि "युगान्त" से लेकर "ग्राम्या" तक मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं । मार्क्स का एक ज्ञानी के रूप में अभिनंदन करते हुए कवि ने उसे शिवजी के तिसरे नेत्र "ज्ञान चक्षु " की उपमा दी है ।

पंत जी की चेतना छायावाद की भावप्रधानता छोड़कर प्रगतिवाद में बुध्दि-प्रधान हो गयी है । आत्मचिंतन और कठोर अंतर्द्वन्द्व के पश्चात पंत जी को मानव विकास का एक मार्ग मिल गया । वह मार्ग है साम्यवाद का । परंतु कवि साम्यवाद के आधार पर केवल वर्गविहीन समाज की रचना करना नहीं चाहते । वे साम्यवाद के साथ स्वर्णयुग के अवतरण की मंगलकामना करते हैं । कवि की रचनात्मक शक्ति एक ऐसी नवसंस्कृति का निर्माण करना चाहती है, जहाँ श्रेणी - वर्ग, रूढ़ि - रीतियाँ, जन-श्रम-शोषण मूत आदर्श आदि का बंधन न हो । उसमें जीवन सक्रिय होगा और जीवन को उन्नत बनानेवाले साधन सभी को समान रूप से उपलब्ध होंगे।ऐसी नवसंस्कृति में वाणी, भाव, कर्म, मन सुसंस्कृत तो होंगे ही जनवास, वसन और मनुष्य शरीर भी सुंदर होंगे ।

कवि का विशाल मानवतावादी हृदय मार्क्सवाद की तरह केवल मजदूरों के लिए मर्माहत नहीं हो उठता । जहाँ भी मानवता पीड़ित है कवि की हार्दिक भावनाएँ वहाँ तक पहूँच जाती है । यही कारण है कि पंत जी के काव्य में मजदूर वर्ग के साथ किसान, मध्यवर्ग, तथा नारीवर्ग का भी विचार हुआ है । भारतीय संस्कृति में पालित - पोषित पंत जी की नारी विषयक कल्पना भी भारतीय संस्कारों से संस्कारित है । इसलिए वे युगयुग से बंदिनी नारी को सर्व पाश तोड़ने के लिए प्रेरित नहीं करते अपितु पुरुष प्रधान संस्कृति को वे नारी को

मुक्त करने का आव्हान करते हैं । अपने आंगन में खेलनेवाले मटमैले, नंगे पासी के दो लड़के कवि को प्यारे लगना, उनके विशाल मानवतावादी हृदय के साथ लघुता पर दृष्टिपात करने की उनकी सूक्ष्म दृष्टि का भी परिचय देती है ।

पंत जी के मतानुसार रोटी और कपडा मनुष्य की मूलभूत समस्याएँ हैं । इसलिए मनुष्य को पहले रोटी की चिंता से मुक्त करना होगा । चिंतामुक्त मनुष्य ही सांस्कृतिक आध्यात्मिक विकास कर सकता है । परंतु रोटी की समस्या वर्ग-संघर्ष , रक्त क्रांति तथा राजनीतिक युध्दों से सुलझाई नहीं जा सकती । एक कलाकार और स्वप्न-स्त्रष्टा के नाते कवि दूसरे प्रकार की सांस्कृतिक अभ्युदय शक्तियों के विकास में श्रध्दा रखते हैं । इसलिए "राजनीति का प्रश्न नहीं रे आज जगत के सम्मुख" कहकर पंत जी ने केवल साम्यवाद को अपनाया नहीं है और साथ ही अपने काव्य को भी उन्होंने राजनीतिकता से मुक्त किया है । पंत जी ने अपने युग की समस्याओं को केवल राजनीतिक समस्या ओं के रूप में देखने की संकीर्णता नहीं बरती है वे उन्हें अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं ।

पंत जी अध्यात्मवाद और मार्क्सवाद, दोनों दर्शनों के सिध्दान्तों से, प्रभावित रहे हैं । परंतु उन्होंने दोनों दर्शनों की एकांत महत्ता स्वीकार नहीं की है । भारतीय दर्शन के सामंतकालीन दुष्परिणाम और मार्क्सवाद के वर्गयुध्द और रक्तक्रांति आदि पक्षों को उन्होंने सांस्कृतिक दृष्टि से अनुपयोगी समझकर, त्याग दिया है । और दोनों के लोककल्याणकारी तत्वों का समन्वय अपने चिंतन के अनुसार किया है ।

रोटी और कपडा मनुष्य की मूलभूत समस्याएँ हैं तो संस्कृति और चिंतन मनुष्य की स्वाभाविक आकांक्षाएँ हैं । मनुष्य की मूलभूत समस्याओं का समाधान कवि भौतिकवाद में पाते हैं और स्वाभाविक आकांक्षांओं की पूर्ति गांधीवाद में । भौतिकवाद से कवि मनुष्य की बाहय परिस्थितियों में परिवर्तन लाना चाहते हैं । इसलिए वे अपनी नवीन सांस्कृतिक अभ्युदय की कल्पना में यंत्रों के पक्षपाती रहे हैं । और इसतरह कवि गांधीवाद के यंत्रविरोध का विरोध करते हैं । क्यों कि उनकी धारणा है कि यंत्र की शक्तियाँ मानव समूह की सांस्कृतिक चेतना के विकास में सहायक हुई हैं । कवि ने मानव की मूलभूत समस्याओं के समाधान और स्वाभाविक आकांक्षा ओं की पूर्ति के लिए भारतीय अध्यात्मवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद को आलिंगनबध्द किया है । कवि को इन दोनों दर्शनों में किसी प्रकार का विरोध नहीं जान पड़ा । दोनों दर्शन एक दूसरे के पूरक लगे । इसलिए दोनों के अतिवाद को त्यागकर उनके लोकोत्तर कल्याणकारी पक्ष को ग्रहण कर उसे मानव कल्याण में लगाना उन्होंने उचित समझा है । यही मानवकल्याण भावना पंत जी का प्रगतिवाद है ।

भारत की वैदिक भूमि में पले पंत जी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दर्शन में विश्वास रखते हुए भी मार्क्सवाद और भौतिक उन्नति में विश्वास रखते हैं क्यों कि वे इन्हें संक्रांति काल की आवश्यकताएँ मानते हैं ।

ज्ञान-विज्ञान के मंथन से मनुष्य ने भौतिक समृध्दि का नवनीत निकाला है । आज भौतिक समृध्दि अपनी चरमसीमा तक पहुँच चुकी है । प्राकृतिक शक्तियाँ मानव की सेवा में रत है । - फिर भी
जग में उत्पीड़न ? जीवन यों अशांत ?

इसका एक मात्र कारण यह है कि इस भौतिक समृध्दि के नवनीत को पचाने के पाचकरस हृदय की रागात्मक भावनाएँ, आज स्त्रवित नहीं हो रही हैं । भौतिक मद से ये भावनाएँ कुण्ठीत हो गयी हैं । भौतिक सुख - समृध्दि के होते हुए भी मानव को आज न चैन है, न शांति, न समाधान । मानव की इस त्रस्त, व्यग्र आत्मा को मुक्ति दिलाने का क्या कोई रास्ता नहीं है ? क्या इन समस्याओं का काई निदान नहीं है ? है, इस के लिए एक रास्ता निश्चित है । कवि के चिंतन में यह रास्ता फिर अध्यात्मवाद की ओर जाता है । कवि के मतानुसार आज विश्व को भावों का नवोन्मेष चाहिए । मानव के हृदय में मानवीय भावनाओं को स्त्रवित होना चाहिए । अर्थात मानव जीवन में अध्यात्मिकता को महत्त्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए । इसलिए आज सारी दुनिया गांधीजी की ओर आशा से देख रही है ।

कवि ने गांधीवाद में आस्था रखी है और गांधीजी को अध्यात्म के प्रतीक के रूप में स्वीकारा भी है । गांधीजी के सत्य अहिंसा तत्त्वों को आध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखा है । गांधीवाद से प्रभावित होकर पंत जी ने विदेशी साम्यवाद की रक्तक्रान्ति का विरोध किया है । पंत जी का मानवताप्रेमी हृदय शांति के लिए मानव का रक्त पानी की तरह बहाना नहीं चाहता । गांधीजी की अहिंसा में कवि की श्रध्दा है । अहिंसा को वे मानव चेतना का नवनीत अथवा विश्वमानवता का सार मानते हैं । फिर भी संक्रांति काल में पंत जी हिंसा को अनिवार्य मानते हैं । इसी कारण"अहिंसा" कविता में पंत जी व्दारा गांधीजी के इस प्रधान अस्त्र का खंडन किया गया है । कवि की दृष्टि में वर्तमान अवस्था में गांधीजी की अहिंसा अनुपयोगी है।

मनुष्य जब विकसित होगा, वर्तमान की दुरावस्था जब दूर होगी तभी अहिंसा कल्याणकारी होती है । इसतरह कवि ने गांधीवाद के कुछ तत्त्वों को त्यागकर और समाजवाद के लोकोपयोगी तत्त्वों को ग्रहण कर गांधीवाद - समाजवाद का गठबंधन किया है । इस गठबंधन में व्यक्तिगत साधना के लिए गांधीवाद का और लोकव्यवस्था के रूप में समाजवाद का सहयोग है ।

पंत जी जिस नवीन समाज का निर्माण करना चाहते हैं उसका ढाँचा समाजवादी होगा और उसमें गांधीवाद की आत्मा की प्रतिष्ठा होगी । पंत जी की दृष्टि में केवल रूसी राजनीतिक आधारों पर खड़ा समाजवाद भारतीयों के लिए एक अनुशासित पशुता का समाज बनेगा । इसलिए वे चेतावनी देते हैं कि पशुता भी कभी कभी निरंकुश बन जाती है।

पंत जी के प्रगतिवाद का एक रूप अरविंद दर्शन से भी प्रभावित रहा है । इसलिए उन्होने विज्ञान को एक अमोघ शक्ति और साधन के रूप में अपनाया है । उनका विश्वास है कि विज्ञान भविष्य में नवीन मानव के लिए लोकोपयोगी समाज का निर्माण कर सकता है । इसलिए पंत जी प्राचीन पूर्वी ज्ञान और आधुनिक पश्चिमी विज्ञान के समन्वय से नवमानव के निर्माण की मंगलाशा करते हैं । अध्यात्मवाद और भूतवाद के सामंजस्य में यही बात पायी जाती है ।

इस प्रकार पंत जी ने भारतीय आध्यात्मिक चेतना में मार्क्स दर्शन के विभिन्न पक्षों का परिष्कार किया है , उनका उन्नयत किया है, न कि तिरस्कार या खंडन । पंत जी आरंभ से ही समन्वयवादी रहे हैं । उनकी सामंजस्य प्रियता ने अध्यात्मवाद, मार्क्सवाद, गांधीवाद,

तथा अरविंद का नवमानवतावाद इ. में से, अपनी नीरक्षीर विवेक बुध्दि से, अच्छी बातों को ग्रहण किया है और विकसित मानवता के लिए समन्वय की साधना की है । पंत जी का यह विराट समन्वय उनका अपना एक अभिनव वाद रहा है । पंत जी के प्रगतिवाद का रूप ऐसा ही है ।

पंत जी की समन्वयात्मक बुध्दि के वैभव का पूर्ण परिचय हमें उनके प्रगतिवादी काव्य ["युगान्त" युगवाणी" "ग्राम्या"] में मिलता है । उनके समन्वय में न उनका मानसिक असंतुलन दिखाई देता है, न मानसिक भटकाव। उनमें समन्वय का सुचिंतित प्रयास है । पंत जी के समन्वय मे सुचिंतित विरोध के दर्शन होते हैं । जो तर्क के बल पर किये हैं । पंत जी ने पूरे मानसिक स्वस्थता के साथ समन्वय का प्रयास किया है जिससे उनके काव्य में आशावाद झलक उठता है ।

यही पंत जी की प्रगतिशीलता है । इसी विराट समन्वय में प्रस्तुत लेखिका ने पंत जी के प्रगतिवादी विचारों को देखा है ।

xxxxxxx